Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يَاأَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

(सूरः बकरः : 22)

अनुवाद : हे लोगो! इबादत करो! तुम्हारे रब की ओर से जिसने तुम्हें पैदा किया। और जो लोग तुमसे पहले थे ताकि तुम तकवा प्राप्त कर सको।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक 1-3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

15 रजब 1446 हिज्री कमरी, 16 सुलह 1404 हिज्री शम्सी, 2-16 जनवरी 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

"यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चाहते, तो बिना किसी मुकाबले के मक्का में प्रवेश कर सकते थे, लेकिन आपने पहले से ही यह तय कर लिया था कि आप यह प्रयास करेंगे कि मक्का वालों की अनुमति से तवाफ करें और केवल तभी मुकाबला करेंगे जब मक्का वाले स्वयं लड़ाई शुरू करके आपको मज़बूर करें। इसीलिए, मक्का का रास्ता खुला होने के बावजूद, आपने हुदैबिया में डेरा डाल दिया।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हुदैबिया में मुसलमानों और कुरैश के बीच एक समझौता हुआ था, जिसे सुलह हुदैबिया कहा जाता है। इसे परंपरा में ग़ज़वा-ए-हुदैबिया भी कहा गया है।

"यात्रा के दौरान... एक समय ऐसा आया जब केवल वही बर्तन पानी से भरा था, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस्तेमाल कर रहे थे। हर दूसरा बर्तन पानी से खाली हो गया था। उस समय, जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी की कमी की शिकायत की, तो आपने अपने बर्तन के मुँह पर अपना मुबारक हाथ रखा और बर्तन के मुँह को झुकाते हुए सहाबा से कहा कि अपने-अपने बर्तन लेकर आओ और भर लो। रावी वर्णन करता है कि उस समय आपकी उंगलियों से पानी इस प्रकार फूट-फूटकर बह रहा था जैसे कोई चश्मा (झरना) फूट पड़ा हो। यहाँ तक कि सभी ने अपनी आवश्यकता के अनुसार पानी ले लिया और मुसलमानों की तकलीफ़ दूर हो गई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

खुदा कहता है कि मेरे बंदों में से कुछ ने इस सुबह को सच्चे ईमान की अवस्था में किया है, लेकिन कुछ ने कुफ्र की हालत में गिरावट की। क्योंकि जिसने यह कहा कि हम पर खुदा के फज़ल और रहम से बारिश हुई है, वह ईमान की हकीकत पर कायम रहा। लेकिन जिसने यह कहा कि यह बारिश अमुक - अमुक सितारे के प्रभाव के कारण हुई है, तो वह बेशक चाँद-सूरज का मोमिन हो गया लेकिन खुदा का काफिर।

ग़ज़वा-ए-हुदैबिया की पृष्ठभूमि, स्थितियाँ और घटनाओं का वर्णन।

अज़ीज़म शहरयार रकीन शहीद, पुत्र श्रीमान मुहम्मद अब्दुल वहाब साहब (बांग्लादेश) और श्रीमान अब्दुल्लाह असद औदा साहब (कबाबीर) की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 नवंबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

"आज सुलह हुदैबिया के संदर्भ में चर्चा शुरू करूंगा। सुलह हुदैबिया ज़ुल्क़ादा 6 हिजरी (मार्च 628 ई.) में हुई। इसे ग़ज़वा-ए-हुदैबिया भी कहा जाता है। ग़ज़वा-ए-हुदैबिया के बारे में अल्लाह तआला ने पूरी सूरत 'सूरा अल्-फ़तह' नाज़िल की। इसका आरंभ इन मुबारक आयात से होता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۔ اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿۲﴾

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَ مَا تَاَخَّرَ وَ يُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَ يَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۳﴾ وَّ يَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۴﴾

(अल् फ़तह आयत : 2 से 4)

निश्चय ही हमने तुम्हें स्पष्ट विजय प्रदान की है ताकि अल्लाह तुम्हारे पूर्व और आगामी हर दोष को क्षमा कर दे, और तुम पर अपनी कृपा को पूर्णता तक पहुँचाए, और तुम्हें सीधा मार्ग दिखाए, तथा अल्लाह तुम्हारी वह सहायता करे जो सम्मान और वर्चस्व वाली हो।

हुदैबिया के युद्ध को हुदैबिया युद्ध क्यों कहा जाता है और इसका परिचय क्या है ?

मैं इसका संक्षिप्त परिचय देता हूँ। हुदैबिया एक कुएँ का नाम था, जिसके कारण इस स्थान का नाम हुदैबिया पड़ा। इस्लाम के आरंभिक काल में यह कुआँ यात्रियों और हाजियों के काम आता था, लेकिन यहाँ कोई आबादी नहीं थी। हुदैबिया मक्का से एक मरहला अर्थात नौ मील की दूरी पर स्थित है और मक्का से मदीना की दूरी लगभग दो सौ पचास मील है। इस प्रकार मदीना से हुदैबिया तक की दूरी लगभग दो सौ इकतालीस मील बनती है। हुदैबिया, मक्का के हरम की पश्चिमी सीमा पर स्थित है और कुछ के अनुसार इसका अधिकांश भाग हरम में सम्मिलित है जबकि कुछ भाग हरम के बाहर है।

यहीं, हुदैबिया के स्थान पर मुसलमानों और कुरैश के बीच एक समझौता हुआ था जिसे सुलह हुदैबिया कहते हैं। रिवायत में इसे ग़ज़वा-ए-हुदैबिया भी कहा गया है।

एक रिवायत में इसे ग़ज़वा-ए-तिहामा भी कहा गया है। मक्का और इसके आसपास के इलाकों को तीव्र गर्मी और लू के कारण तिहामा कहा जाता था, इस कारण इसे तिहामा भी कहा गया।

(सब्लुल् हुदा, भाग 5, पृष्ठ 70, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

(एटलस सीरत-ए-नबवी, पृष्ठ 326)

(फरहंग सीरत, पृष्ठ 100, ज़वार अकैडमी, कराची)

(अस-सहीह मिन सीरत-अन्-नबी अल्-आज़म, भाग 15, पृष्ठ 59, अल्--मर्कज़ अल-इस्लामी लिद्दिरासात)

(एन्साइक्लोपीडिया सीरत-ए-नबी, पृष्ठ 188, ज़म ज़म पब्लिशर्स)

(अल-मुअजम अल्-अवुसत, भाग 2, पृष्ठ 356, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

(सबलुल् हुदा, भाग 5, पृष्ठ 87, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

इसका कारण क्या था। रिवायतों और इतिहास से पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक ख़्वाब की बुनियाद पर हुदैबिया का सफर तय किया। रिवायत के मुताबिक़, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में दिखाया गया कि आप अपने सहाबा के साथ अमन की हालत में, अपने सिर मुंडवाते और बाल कटवाते हुए मक्का में दाखिल हो रहे हैं। यह भी दिखाया गया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह में दाखिल हुए हैं, उसकी चाबी अपने पास ली है, और मैदान-ए-अराफात में ठहरने वालों के साथ ठहरे हैं।

इस पर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अरब के लोगों और आसपास के बदीहा-नशीन (गांवों में रहने वाले) लोगों को बुलाया ताकि वे सब आपके साथ चलें।

इस सफ़र में मुसलमानों के पास तलवारों के अलावा कोई हथियार नहीं था। वह तलवारें भी मयान में बंद थीं। उस समय तलवार हर आदमी अपने साथ रखता था,

इसलिए यह नहीं समझा जाता था कि जिसके पास तलवार है, वह ज़रूर जंग करेगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपसे कहा : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अगर अबू सुफ़ियान और उसके साथियों की तरफ़ से मुसलमानों के लिए कोई ख़तरा है, तो आपने जंग के लिए सामान साथ क्यों नहीं लिया?

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया : चूंकि मैं उमरा की नीयत से जा रहा हूँ, इसलिए मैं यह नहीं चाहता कि अपने साथ हथियार लेकर चलूं।

सैयदना मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी किताब सीरत ख़ातमन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस ख्वाब का वर्णन करते हुए लिखा है :

"आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस ख़्वाब को देखने के बाद अपने सहाबा को हिदायत दी कि वे उमरा के लिए तैयारी कर लें। उमराह, हज की एक छोटी किस्म थी, जिसमें हज के कुछ अरकान (अनुष्ठान) छोड़कर सिर्फ़ बैतुल्लाह का तवाफ़ और क़ुर्बानी की जाती थी।"

इसके लिए साल का कोई ख़ास वक़्त निर्धारित नहीं था, बल्कि यह इबादत हर मौसम में अदा की जा सकती थी।

इस अवसर पर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा को यह भी ऐलान किया:

"चूंकि इस सफर का उद्देश्य किसी तरह का जंगी मुक़ाबला करना नहीं है, बल्कि सिर्फ़ एक शांतिपूर्ण धार्मिक इबादत अदा करना है, इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि इस सफर में हथियार साथ न लें। हां, अरब के दस्तूर के मुताबिक़, अपनी तलवारों को मयान में बंद कर, मुसाफ़िराना अंदाज़ में अपने साथ रखा जा सकता है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, एम.ए, पृष्ठ 749)

ग़ज़व-ए-हुदैबिया के अवसर पर मुसलमानों की संख्या कितनी थी? इस बारे में भी मतभेद पाया जाता है। एक रिवायत में है कि एक हज़ार से कुछ ऊपर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे। एक अन्य रिवायत में यह संख्या एक हज़ार तीन सौ बताई गई है, और एक रिवायत में एक हज़ार चार सौ का ज़िक्र है। यहाँ तक कि सत्रह सौ तक संख्या की रिवायत भी वर्णन की जाती है। मतलब, एक हज़ार से लेकर सत्रह सौ तक विभिन्न रिवायतें हैं।

(बुख़ारी किताब अल् मनासिक, बाब मन अशअर व क़ल्लद बि-ज़ी-हुलै-फा... वग़ैरह, हदीस: 1694)

(बुख़ारी किताब अल-मग़ाज़ी, बाब ग़ज़व-ए-हुदैबिया, हदीस: 4155, 4154, 4152)

(फतह अल-बारी, जिल्द 7, सफ़ा 559, क़दीमी कुतुब खाना)

जब रवाना होने का समय आया, तो कुर्बानी के जानवर हज़रत नाजिया बिन जंदुब असलमी रज़ियल्लाहु अन्हो के सुपुर्द कर दिए गए, जो उन्हें ज़ूल्-हुलैफा ले गए। ज़ूल्हुलैफा भी मदीना से छह या सात मील की दूरी पर एक जगह है।

सफ़र पर निकलते वक्त मदीना में हज़रत पैग़ंबरसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमेशा एक क़ायम मुक़ाम या अमीर मुकामी निर्धारित किया करते थे। इस सफ़र पर निकलने से पहले आपने इब्न सअद की रिवायत के मुताबिक, मदीना पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हो को नायब निर्धारित किया। जबकि इब्न हिशाम की रिवायत है कि हज़रत नुमैला बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो को नायब निर्धारित किया गया, और बलादुरी ने हज़रत अबू रहम कुल्सूम बिन हुसैन का ज़िक्र किया है। कुछ के नज़दीक हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम को इमामत-ए-सलात के लिए निर्धारित किया गया, और बाकी को नायब बनाया गया। इसमें भी विभिन्न रिवायतें हैं।'

(सबलुल् हुदा, भाग 5, पृष्ठ 33, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया)

(फ़रहंग-ए-सिरत, पृष्ठ 105)

हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमऔर सहाबा की सफ़र की तैयारी और रवाना होने की तफ़सील इस तरह बयान हुई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने यह ऐलान करने के बाद अपने घर में दाखिल हुए और ग़ुस्ल किया। फिर सुहार के बने हुए दो कपड़े पहने। सुहार यमन में एक बस्ती है, और उसके कपड़े अच्छे होते थे। इसके बाद आपने अपने दरवाजे पर आकर अपनी ऊंटनी क़सवा पर सवार हुए। इस सफ़र में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो भी आपके साथ थीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने ज़ुल्क़ादा के शुरू में सोमवार के दिन सफ़र शुरू किया और ज़ू-हुलैफा पहुंचे, जहां आपने ज़ुहर की नमाज़ अदा की। फिर कुर्बानी के जानवर मंगवाए, जिनकी संख्या सत्तर थी। उन्हें गानियां (हार) पहनाई गईं। फिर आपने कुछ ऊंटों को इशआर किया, अर्थात उनकी कूब (कंधे) पर निशान लगाया, ताकि यह मालूम हो सके कि ये कुर्बानी के ऊंट हैं। इसके बाद आपने हज़रत नाजिया बिन जंदुब रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया, तो उन्होंने बाकी जानवरों का भी इशआर किया और उन्हें भी हार पहनाए। बाकी मुसलमानों ने भी अपने जानवरों को हार पहनाए और इशआर किया। इस सफ़र में मुसलमानों के पास दो सौ घोड़े थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एहराम बांधने के बारे में तफ़सील इस तरह मिलती है कि आपने दो रकात नमाज़ पढ़ी और ज़ू-हुलैफा की मस्जिद के दरवाजे से सवार हुए। आपने उमरा का एहराम बांधा, ताकि लोग जान लें कि आप बैतुल्लाह की ज़ियारत और उसकी तअज़ीम के लिए निकले हैं। इसके बाद आपने यह तलबिया पढ़ा।

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ۔

اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ۔

मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ। मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ॥

सब तारीफ और नेअमत तेरी है और बादशाही तेरी है। तेरा कोई शरीक नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुरैश के हालात का इल्म हासिल करने के लिए, कि कहीं वे किसी शरारत का इरादा तो नहीं रखते, एक खबर रसां हज़रत बुसर बिन सुफ़यान रज़ियल्लाहु अन्हो को आगे भेजा। और ज्यादा एहतियात के तौर पर आपने हज़रत अब्बाद बिन बश्र रज़ियल्लाहु अन्हो को, और एक रिवायत के मुताबिक हज़रत सअद बिन ज़ैद अश्हली रज़ियल्लाहु अन्हो को बीस घुड़सवारों का अमीर बनाकर आगे भेजा।

(सबलुल् हुदा, भाग 5, पृष्ठ 80 ,34-33, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

मुक़्तलिफ़ मक़ामात पर पड़ाव करते हुए जब आपसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रौहा नामी जगह पहुंचे, जो मदीना से 73 किलोमीटर के फ़ासले पर है, तो आपको खबर मिली कि बहर-ए-अहमर के साथ साहिल पर वादी ग़ैका में कुछ मुशरेकीन मौजूद हैं और उनसे ख़तरा है कि वे अचानक मुसलमानों पर हमला कर सकते हैं। तब आपने हज़रत अबू कतादा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो, जिन्होंने उमरा का एहराम नहीं बांधा था, को सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमाअत के साथ उनकी तरफ रवाना किया।

(फतह अल्-बारी, भाग 4, पृष्ठ 28, कदीमी कुतुब खाना)

(सीरत इनसाइक्लोपीडिया, भाग 8, पृष्ठ 50, दारुस्सलाम)

इस सफर के दौरान कुछ मोज़ज़ात (चमत्कारों) का भी वर्णन मिलता है।

सफर के दौरान एक जगह लोग हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गिर्द जमा हो गए, जबकि आपके सामने एक पानी का बर्तन था और आप उससे वुज़ू फ़रमा रहे थे। आपने पूछा, "क्या बात है?" सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया, "हे रसूलुल्लाह स.अ.व., आपके पास इस बर्तन में जो पानी है, उसके अलावा हमारे पास न तो पीने का पानी है और न वुज़ू करने के लिए।"

यह सुनकर हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस बर्तन में अपना हाथ रखा। उसी वक्त आपकी उंगलियों के दरमियान से इस तरह पानी के फव्वारे निकलने लगे जैसे पानी के चश्मे फूट पड़े हों। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि हमने सबने पानी पिया और वुज़ू किया। अगर हम तादाद में एक लाख भी होते, तो वह पानी हमें काफी होता, जबकि उस वक्त हमारी तादाद केवल 1500 थी।

(सीरत अल्-हल्बिया, भाग 3, पृष्ठ 14, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस वाक़े को तारीख़ की किताबों से लेते हुए इस तरह बयान किया है कि:

"सफ़र के दौरान... एक ऐसा वक़्त आया कि सिवाय उस लोटे के, जो हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस्तेमाल में था, हर बर्तन पानी से खाली हो गया था। इस अवसर पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ से पानी की शिकायत पर आपने अपने लोटे के मुंह पर अपना दस्ते-मुबारक रखा और लोटे के मुंह को झुकाते हुए सहाबा से फ़रमाया कि अब अपने-अपने बर्तन लाओ और भर लो।"

रावी वर्णन करते हैं कि "उस वक्त आपकी उंगलियों के अंदर से पानी इस तरह फूट-फूटकर बह रहा था जैसे एक चश्मा जारी हो। यहां तक कि सबने अपनी ज़रूरत के मुताबिक पानी ले लिया और मुसलमानों की परेशानी खत्म हो गई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 751)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस वाक़े को वर्णन करते हुए फ़रमाया :

"लिक़ा के दर्जे में कभी-कभी इंसान से ऐसे अमल सादिर होते हैं जो बशर की ताक़तों से बढ़कर मालूम होते हैं और इलाही ताक़त का रंग अपने अंदर रखते हैं... बहुत से मोज़ज़ात (चमत्कार) ऐसे हैं जो सिर्फ ज़ाती इख़्तियार के तौर पर हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दिखाए, जिनके साथ कोई दुआ नहीं थी।"

"कई बार थोड़े से पानी को, जो सिर्फ एक प्याले में था, अपनी उंगलियों को उस पानी के अंदर डालने से इतना बढ़ा दिया कि पूरा लश्कर, ऊंटों और घोड़ों ने वह पानी पिया और फिर भी पानी वैसा ही अपनी मात्रा पर मौजूद था। कई बार दो-चार रोटियों पर हाथ रखने से हज़ारों भूखे-प्यासे लोगों को उनका पेट भर दिया। कभी-कभी थोड़े दूध को अपने होंठों से बरकत देकर एक जमाअत का पेट भर दिया। कई बार खारे पानी के कुएं में अपने मुंह का लुआब डालकर उसे मीठा बना दिया। कभी-कभी गंभीर रूप से ज़ख़्मी लोगों पर हाथ रखकर उन्हें अच्छा कर दिया। और कभी-कभी आंखें, जो लड़ाई के दौरान बाहर आ गई थीं, अपने हाथ की बरकत से सही कर दीं। इसी तरह और भी बहुत से अमल अपने ज़ाती इख़्तियार से किए, जिनके साथ एक छुपी हुई इलाही ताक़त शामिल थी।"

(आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ायन, भाग 5, सफा 66-65)

इन बातों का वर्णन आपने हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मोज़ज़ात के सिलसिले में किया है।

कुरैश का लश्कर तैयार करना और पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमका सहाबा से मशविरा :

जब कुरैश को यह खबर मिली कि मुसलमान जंग के लिए नहीं बल्कि बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिए आ रहे हैं, तो उन्होंने मुसलमानों को मक्का से रोकने का फैसला किया। हर वह शख्स, जो तलवार उठा सकता था, मुसलमानों को रोकने के लिए निकल पड़ा। हालांकि, उन्हें पता था कि मुसलमान जंग के इरादे से नहीं आ रहे हैं।

उन्होंने अपने हलीफ़ों को साथ मिलाकर आठ हज़ार का लश्कर तैयार किया और मक्का के पश्चिम में वादी बलदह में पड़ाव डाल लिया। साथ ही, ख़ालिद बिन वलीद को 200 सवारों के साथ हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमऔर सहाबा का रास्ता रोकने के लिए असफान से आठ मील दूर वादी कुराअल-ग़मीम भेज दिया।

(उद्धारित सुलह-ए-हुदैबिया, बाज़्मील, पृष्ठ 119-114, नफ़ीस अकेडमी)

(फ़रहंग सीरत, पृष्ठ 243 ,61)

हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा और मरवान बिन हकम से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसफ़ान के करीब अश्तात के तालाब पर पहुँचे, तो आपका सुराग़ रसा (ख़ुफिया खबर देने वाला) आपके पास आया। उसने कहा कि क़ुरैश ने आपके खिलाफ बड़ा लश्कर जमा किया है। उन्होंने विभिन्न क़बीलों को इकट्ठा किया है, और वे आपसे लड़ने और आपको बैतुल्लाह से रोकने का इरादा रखते हैं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"हे लोगो! मुझे मशविरा दो। क्या तुम समझते हो कि जो लोग हमें बैतुल्लाह से रोकना चाहते हैं, मैं उनके घर-परिवार और बच्चों पर चढ़ाई करूं? और अगर वे हमारी तरफ आएँ, तो हम उन्हें हारने के लिए छोड़ दें?"

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा :

"हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आपने बैतुल्लाह का इरादा करके यात्रा शुरू की है। आपने न किसी को मारने का इरादा किया है और न ही किसी से लड़ने का। इसलिए आप उसी घर (काबा) की तरफ चलें। जिसने हमें उससे रोकने की कोशिश की, हम उससे लड़ेंगे।"

(बुख़ारी, किताब-अल्-मग़ाज़ी, बाब गज़वा-ए-हुदैबिया, हदीस: -4178 4179)

अर्थात हमें अपना सफर जारी रखना चाहिए। हज़रत उउसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की इस बात से सहमति जताई। इसके बाद हज़रत मुक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया:

"अल्लाह की क़सम! हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हम आपसे वह बात नहीं कहेंगे, जो बनी इस्राईल ने अपने नबी मूसा से कही थी कि 'तुम और तुम्हारा रब जाओ और लड़ो, हम यहाँ बैठे रहेंगे।' हे रसूलुल्लाह, आप जाएँ। आप और आपका रब क़िताल करें, और हम भी आपके साथ क़िताल करेंगे।"

(सबलुल् हुदा, भाग 5, पृष्ठ 37, दारुल् कुतुब अल् इल्मिया, बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो का बयान

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अंदाज़ में इस वाक़े को बयान करते हुए फ़रमाया:

"मक्का वालों को पता चल गया। वे लश्कर लेकर आ गए और उन्होंने मुसलमानों से कहा, 'तुमको यहाँ आने की इजाज़त किसने दी है?' मुसलमानों ने कहा,'हम लड़ने के लिए नहीं आए हैं। सिर्फ इसीलिए आए हैं कि उमरा कर लें। यह मक़ाम तुम्हारे नज़रिए से भी मुबारक है और हमारे नज़रिए से भी। हम इसकी ज़ियारत के लिए आए हैं, लड़ाई के लिए नहीं।' उन्होंने कहा, 'तवाफ़ का सवाल ही पैदा नहीं होता।'"

काफिरों ने इंकार कर दिया। "हमारी और तुम्हारी लड़ाई है। अगर तुम मक्का आए और तवाफ कर गए, तो पूरे अरब में हमारी नाक कट जाएगी कि तुम्हारा दुश्मन आकर तुम्हारे घर में तवाफ कर गया। हम सारी दुनियाए अरब को इजाज़त दे सकते हैं, मगर तुम्हें नहीं दे सकते।"

(सेए ए-रूहानी (7), अनवारुल् उलूम, भाग 24, पृष्ठ 247)

जैसा कि वर्णन किया गया है, ख़ालिद बिन वलीद 200 सवारों के लश्कर के साथ नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के काफिले को रोकने के लिए आगे आए। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इसकी ख़बर हुई, तो आपने ख़ालिद बिन वलीद के रास्ते से हटकर एक अलग रास्ता अपनाया और हुदैबिया पहुँच गए।

इसकी तफ़सील में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है:

"जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चंद दिनों के सफर के बाद उस्फ़ान के करीब पहुँचे, जो मक्का से लगभग दो मंज़िल के रास्ते पर है, तो आपके ख़बर रसा ने वापस आकर बताया कि क़ुरैश मक्का बहुत जोश में हैं और आपको रोकने का पक्का इरादा किए हुए हैं। यहाँ तक कि उनमें से कुछ ने अपने जोश और उग्रता के इज़हार के लिए चीतों की खालें पहन रखी हैं और हर हाल में मुसलमानों को रोकने का इरादा रखते हैं। यह भी पता चला कि क़ुरैश ने अपने कुछ जांबाज़ सवारों का एक दस्ता ख़ालिद बिन वलीद की क़यादत में, जो उस वक्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, आगे भेज दिया है। उस दस्ते में इक़रिमा बिन अबू जहल भी शामिल थे।"

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह ख़बर सुनकर टकराव से बचने के लिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि मक्का के जाने-माने रास्ते को छोड़कर दाहिनी तरफ़ हो जाएँ।

"इसलिए मुसलमानों ने एक कठिन और ऊबड़-खाबड़ रास्ता अपनाया और समुद्र की तरफ बढ़ना शुरू किया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 750)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झगड़े से परहेज़

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने झगड़े से बचना पसंद किया क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लड़ाई के लिए नहीं, बल्कि उमरा करने के इरादे से निकले थे। आप उस रास्ते से निकल गए और अपनी मंज़िल तक पहुँच गए। ख़ालिद बिन वलीद को इस बात का एहसास तक नहीं हुआ कि मुसलमान रास्ता बदलकर निकल गए। जब ख़ालिद ने इस्लामी लश्कर के ग़ुबार को देखा, तो तुरंत क़ुरैश को ख़बर देने दौड़े।

(सबलुल्हुदा वल्रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 38)

(सुल्ह-ए-हुदैबिया, सफा 125, नफ़ीस अकैडमी)

हुदैबिया में नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पड़ाव

हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हो और मरवान रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हुदैबिया के वक़्त उस घाटी में पहुँचे, जहाँ से क़ुरैश के इलाके में प्रवेश होता था। आपकी ऊँटनी बैठ गई और आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। लोगों ने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन वह टस से मस न हुई। लोगों ने कहा:

"क़सवा (ऊँटनी) अड़ गई है।"

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"क़सवा अड़ी नहीं है और न ही यह उसकी आदत है। इसे तो हाथियों को रोकने वाली पाक ज़ात (अल्लाह) ने रोका है।"

फिर आप ने फ़रमाया:

"उस ज़ात की कसम, जिसके हाथ में मेरी जान है, क़ुरैश जो भी बात मांगेंगे, जिसमें वे अल्लाह की हुरमतों (पवित्रताओं) की ताज़ीम चाहते हों, मैं उन्हें वह ज़रूर दूँगा।"

फिर आपने ऊँटनी को डाँटा, तो वह खड़ी हो गई। इसके बाद आपने क़ुरैश की तरफ से हटकर हुदैबिया के किनारे पर एक कम पानी वाले हौज़ पर पड़ाव ड ा ल ा ।

(बुख़ारी, किताब-उल-शुरूत, हदीस 2732-2731)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं:

"यहाँ आपकी ऊँटनी खड़ी हो गई और उसने आगे चलने से इंकार कर दिया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा, 'हे रसूलल्लाह! आपकी ऊँटनी थक गई है, आप दूसरी ऊँटनी पर सवार हो जाएँ।' लेकिन आपने फ़रमाया, 'नहीं, नहीं, यह थकी नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला का यही मंशा मालूम होता है कि हम यहाँ ठहर जाएँ। मैं यहाँ ठहरकर मक्का वालों से हर प्रकार से दरख़्वास्त करूँगा कि वे हमें हज करने की इजाज़त दे दें। चाहे वे कोई भी शर्त रखें, मैं उसे मान लूँगा।'"

उस समय मक्का की फ़ौज, मक्का से दूर एक स्थान पर खड़ी थी और मुसलमानों का इंतज़ार कर रही थी। अगर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चाहतेत ो बिना किसी मुकाबले के मक्का में दाखिल हो सकते थे। लेकिन आपने यह तय किया था कि पहले आप कोशिश करेंगे कि मक्का वालों की इजाज़त के साथ तवाफ़ करें और केवल उसी स्थिति में लड़ाई करेंगे जब मक्का वाले खुद जंग शुरू करें। इसीलिए, मक्का का रास्ता खुला होने के बावजूद, आपने हुदैबिया पर पड़ाव डाल दिया।

(दीबाचा तफ़्सीर-उल-क़ुरआन, अनवारुल् उलूम, भाग 20, पृष्ठ -306 307)

पानी की कमी की घटना बुख़ारी में रिवायत है कि हुदैबिया में मुसलमानों ने जिस कम पानी वाले हौज़ पर पड़ाव डाला, लोग उससे थोड़ा-थोड़ा पानी लेने लगे। थोड़ी ही देर में उन्होंने सारा पानी निकाल लिया और खत्म कर दिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्यास की शिकायत की।

(बुख़ारी, किताबुल् शुरूआत, हदीस 2732-2731)

हज़रत नाजिया बिन अजम रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं:

"जब हुदैबिया के अवसर पर पानी की कमी की शिकायत की गई, तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे बुलाया और अपनी तरकश से एक तीर निकाला और मुझे दिया। फिर आपने एक डोल पानी मँगवाया, वुज़ू किया और उस पानी में कुल्ली की। फिर फ़रमाया, 'इस डोल को उस सूखे हुए कुएँ में डाल दो और उसमें तीर गाड़ दो।' मैंने ऐसा ही किया। अल्लाह की कसम, मुश्किल से मैं कुएँ से बाहर निकला क्योंकि पानी ने मुझे चारों तरफ़ से घेर लिया था। कुएँ में पानी उबालने लगा और किनारों तक भर गया। लोग किनारे से पानी भरने लगे और सभी ने अपनी प्यास बुझा ली।"

(सबलुल् हुदा, भाग 5, पृष्ठ : 41)

बारिश का वर्णन : हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक बारिश का वाकया वर्णन किया है :

"उसी रात या उसके आसपास बारिश हुई। सुबह जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए आए, तो मैदान पानी से तरबतर था। आपने सहाबा से मुस्कुराते हुए पूछा, 'क्या तुम जानते हो कि इस बारिश के अवसर पर तुम्हारे ख़ुदा ने क्या इरशाद फ़रमाया है?' सहाबा ने कहा, 'अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं।' आपने फ़रमाया:

'अल्लाह तआला कहता है कि मेरे बंदों में से कुछ ने इस सुबह सच्चे ईमान के साथ की, जबकि कुछ ने कुफ़्र की हालत में। जिसने कहा कि यह बारिश अल्लाह के फ़ज़ल और रहमत से हुई, वह ईमान पर क़ायम रहा। लेकिन जिसने कहा कि यह बारिश अमुक अमुक सितारों के असर से हुई, तो निसन्देह वह चाँद सूरज का तो मोमिन हो गया पर उसने अल्लाह का इंकार कर दिया।'"

"इस इरशाद से, जो तौहीद (अल्लाह की एकता) से भरा हुआ है, रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को यह सबक दिया कि बेशक, अल्लाह ने इस दुनिया के निज़ाम को चलाने के लिए असबाब (कारणों) और इलल (प्रभावों) के तहत विभिन्न प्रकार के ज़रिए तय किए हैं। बारिश इत्यादि के मामले में आसमानी सतहों के असर से इंकार नहीं किया जा सकता। लेकिन असली तौहीद यह है कि इंसान, इन ज़रियों के बावजूद, उस हकीकी हस्ती (अल्लाह) से ग़ाफिल न हो, जो हर चीज़ का बनाने वाला है।"

अर्थात अल्लाह तआला से कभी ग़ाफिल न हो। असबाब (कारण) तो अल्लाह

ने दिए हैं, लेकिन यह असबाब भी अल्लाह के हुक्म से ही काम करते हैं।

"वह हस्ती, जिसने इन सब असबाब को पैदा किया है और जो इस कायनात का असली कारण है, उसके बिना ये सारे माध्यम एक मुर्दा कीड़े से ज़्यादा हैसियत नहीं रखते।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, एम.ए., पृष्ठ 752-751)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए अम्र बिन सालेम और बसर बिन सुफ़ियान के तोहफे : यह भी लिखा है कि अम्र बिन सालेम और बसर बिन सुफ़ियान, जो खज़ाआ क़बीले से थे, उन्होंने हुदैबिया के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बकरियां और ऊंटनियां तोहफे में दीं।

अम्र बिन सालेम ने हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को भी एक ऊंट तोहफे में दिया। हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हो अम्र के दोस्त थे। जब हज़रत साद इस तोहफे को लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और बताया कि अम्र ने यह ऊंट उन्हें तोहफे में दिया है, तो आपने फ़रमाया:

"अम्र ने हमें भी तोहफे में दिया है। अल्लाह अम्र के माल में बरकत दे।"

फिर आपने हुक्म दिया कि ऊंटों को ज़बह (कुर्बानी) करके सहाबा में बांट दिया जाए और बकरियों को भी उनमें तखसीम (वितरित) कर दिया जाए। इस तखसीम में आपने खुद को भी शामिल किया।

फिर आपने हज़रत उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास ऊंटनी का गोश्त भिजवाया, जैसा दूसरों के पास भिजवाया था। आपने अपनी बकरी में से भी कुछ गोश्त हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया। जो शख्स यह तोहफा लेकर आया था, उसे आपने कपड़े का तोहफा देने का हुक्म दिया।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 42, दारुल् कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

"और यह सारा तोहफा जो आपको मिला था, आपने वह भी एक जगह इकट्ठा करके सभी सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) में तखसीम (वितरित) कर दिया।

यह वर्णन तो चल रहा है, हुदैबिया के हवाले से और भी कुछ विस्तार से बातें हैं। कैसे हुआ? क्या हुआ? सब कुछ बाकी इंशा अल्लाह आने वाले समय में बताया जाएगा।

इस वक्त मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करूंगा और नमाज़ के बाद जनाज़ा पढ़ाऊंगा। पहला वर्णन है

अज़ीज़म शहरयार रकीन का, जो जनाब मुहम्मद अब्दुल वहाब साहब बांगलादेश के बेटे थे।

इस वाकिये के बारे में लिखा गया है कि 5 अगस्त को सरकार के मुअज़्ज़ल होने के बाद बांगलादेश में पिछले दिनों काफी फसाद रहा है। जब सरकार मुअज़्ज़ल हो गई तो मुल्क में इन्धेराफ़ (अराजकता) फैल गई और मुखालिफ़ीन-ए-अहमदियत ने इसका फ़ायदा उठाकर अहमद नगर जमाअत पर हमला कर दिया। पहले भी यहां हमला हो चुका था। मुखालिफ़ीन अहमदियों के घर जलाते जा रहे थे और मस्जिद में आग लगाकर जामिया और जलसा गाह की तरफ आए। वह हालांकि जामिया में घुसने में कामयाब न हो सके, लेकिन जलसा गाह के पीछे की तरफ से आकर जलसे की हिफाज़त के लिए वहां ड्यूटी पर मौजूद खुद्दाम को घेर लिया और उन पर वार करते रहे। इसी दौरान अज़ीज़म शहरयार के सिर पर घातक चोट आई। इसकी वजह से तीन महीने के इलाज के बाद आख़िरकार आठ नवम्बर को, 16 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन और इस तरह उन्हें शहादत का मक़ाम हासिल हुआ।

अज़ीज़म शहरयार वक़्फ़-ए-नौ की तहरीक में शामिल थे। पीछे रहने वालों में माता पिता और दादा-दादी के अलावा एक बहन और दो भाई शामिल हैं। मरहूम के खानदान में अहमदियत का नफ़ूज़ उनके परदादा हज़रत मंशी सराज़-उल-इस्लाम साहब के ज़रिए हुआ, जिन्होंने अलामा ज़िल-उर्रहमान साहब के ज़रिए खानदान के अक्सर अफ़राद समेत बैत करके जमाअत अहमदिया में शमूलियत इख़्तियार की। मरहूम ख़ुद भी जमाअत का काम करने वाले थे। अटफाल-अल-अहमदिया अहमद नगर की मजलिस-ए-आमिला में बतौर सचिव माल खिदमत कर रहे थे।

उनकी वालिदा लिखती हैं कि उनका यह बेटा शुरुआत से ही नमाज़ और इबादत का पाबंद और जमाअती कामों में सबसे ज्यादा दिलचस्पी लेने वाला रहा है। बल्कि अगर इसे पढ़ाई का वास्ता देकर जमाअती कामों में बाद में हिस्सा लेने के लिए कहा जाता तो नाराज़ हो जाता था। जब भी अहमद नगर में कोई इत्तेहाद या जलसा का मौका होता तो यह सबसे आगे घर से निकलकर वहां पहुंच जाता। घर का छोटा बेटा होने के नाते मां कहती हैं, मेरा हाथ भी बहुत बटाता था। किचन और पकाई के कामों में बहुत मदद करता था। यह लड़का बहुत सोशल था, किसी भी अजनबी से मिलकर बहुत जल्दी घुल-मिल जाता था। वालिदा का कहना है कि यह भी अपने बड़े भाई की तरह जामिया में दाख़िले की तैयारी कर रहा था। वालिदा साहिबा ने यह भी लिखा कि उन्हें पहले से ही ऐसी ख्वाबें आई थीं, जिनसे अज़ीज़म शहरयार की शहादत के बारे में पहले से ख़बर दी गई थी।

खुद्दामुल् अहमदिया अहमद नगर के क़ाएद नजम-उल-साकिब साहब हैं। कहते हैं कि पहले गुज़श्ता साल मार्च 2023 में जलसा के दौरान होने वाले हमलों के नतीजे में इंजीनियर ज़ाहिद हसन साहब शहीद हुए थे और मैंने यहां उनका जनाज़ा ग़ायब पढ़ाया था। ख़ुतबा में उनका ज़िक्र भी किया था, तो कहते हैं कि हम सब ड्यूटी पर नाश्ता करते हुए ख़ुतबा सुन रहे थे, तो इस अवसर पर अज़ीज़म शहरयार रकीन ने कहा कि आज अगर मैं शहीद होता तो मेरा भी यह ज़िक्र हो रहा होता।

तफसील में लिखते हैं कि जब हमलावर लोगों ने 5 अगस्त को अचानक हमला किया। इस दफ़ा के हंगामों के बाद जो हमला हुआ है, तो काफी तादाद में लोग जामिया की हिफाज़त के लिए मौजूद थे और सड़क के दो तरफ़ सिर्फ़ पंद्रह खुद्दाम जलसा गाह की हिफाज़त के लिए ड्यूटी पर खड़े रहे। शहरयार इन ही में आकर शामिल हुआ। बड़ी दिलेरी से पहरा देते रहे और हिफाज़ती इक़दामात में क़ायद साहब का हाथ बटाता रहा। अचानक हमलावर गेट तोड़-फोड़ कर अंदर घुस गए और घुसते ही हल्ला बोल दिया और डंडों से लोगों को ज़दोक़ूब किया, मारा, बहुतों को जख़्मी किया और सबसे ज्यादा ज़ख़्म, चोट मरहूम को लगी और उन्हें सिर पर उस वक़्त बहुत ज्यादा चोटें आईं, इतनी ज्यादा चोटें थीं कि निचला धड़ बिल्कुल सुन हो गया था, जिसका इज़हार उन्होंने वहीं किया। इसके थोड़ी देर बाद आर्मी की गाड़ी आई और फौज के आ जाने से हमलावरों ने जख़्मी अहमदियों को छोड़कर वहां से भागने की राह ली।"

"क़ायिद साहब लिखते हैं कि किसी वक़्त भी ड्यूटी और खिदमत अदा करने के लिए तैयार रहता था। मस्जिद की सफाई और वक़ार-ए-अमल में खुद भी हिस्सा लेता था और दूसरों को भी शामिल करता था। फज्र और तहज्जुद की नमाज़ पर लोगों को जगाने का फरज़ अदा करता था। जामिया बांगलादेश के मुंत्तिहिन ज़ुहेयर साहब कहते हैं कि जब उसकी तदफीन हो रही थी, उस दिन इस इलाके में जलसा गाह में मेरी ड्यूटी थी, तो मैंने अहमद नगर के एक ख़ादिम से पूछा कि आप लोग अक्सर इसके साथ होते थे और खेलते भी रहे हैं। कौन सी ऐसी ख़ुसूसियत थी जो इसे दूसरों से बड़ी मुम्ताज़ करती थी? तो उन्होंने कहा कि वही बात कि 23 के जलसे के अवसर पर शहीद ज़ाहिद हसन के बारे में नमाइश लगाई और हम सब मिलकर देख रहे थे तो उस वक्त अचानक रकीन कहने लगा, "काश ज़ाहिद भाई की तरह मैं भी ऐसे शहीद हो पाता, मेरी तस्वीर भी यहाँ होती और मेरा ज़िक्र भी ख़ुत्बा में होता।" कहते हैं हम इस बात को उससे सुनकर बड़े हैरान थे। अल्लाह तआला ने उसकी यह ख्वाहिश पूरी कर दी।

मरहूम की चची ज़ीनत फौज़िया कहती हैं, वह अपने भाइयों में सबसे छोटा था। सबकी बात मानता, सबके काम कर देता था और हमले के दिन जब घर से जा रहा था तो उस वक्त कह रहा था कि मस्जिद की हिफाज़त करनी है, अगर कामयाब न हो सका तो शहीद हो जाऊँगा। बहरहाल, शहीद मरहूम ने बड़े-बड़ों के लिए भी क़ुर्बानी की एक मिसाल क़ायम कर दी है। अल्लाह तआला उसके दरजात को बुलंद फरमाए और माता पिता और परिजनों को सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

दूसरा ज़िक्र है, जनाज़ा-ए-ग़ायब पढ़ाऊँगा, यह हमारे एक पुराने अरबी दोस्त हैं।

क़बाबीर के अब्दुल्ला असद ओउदह साहब गुज़श्ता दिनों में 94 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हो गई है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राज़िउन।

उनकी परवरिश ऐसे घराने में हुई जो क़बाबीर में अहमदी मुबल्लिग के साथ सबसे ज्यादा मोहब्बत और इखलास का ताल्लुक़ रखता था। इन मबलिग़ीन की मुहस्सिन कोशिशों और दुआओं और इन सब से बढ़कर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआओं के नतीजे में क़बाबीर हमेशा अल्लाह तआला की

हिफाज़त और अमन में रहा। खासकर फिलिस्तीन की जंग और 1948 में बड़े पैमाने पर नकल मकानी के दौरान अल्लाह तआला ने क़बाबीर को महफ़ूज़ रखा। मरहूम हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने से लेकर आख़िर उमर तक खलीफाए अहमदियत के साथ ख़त और किताबत और इताअत और इखलास का गहरा ताल्लुक़ रखते थे। इबतेदाई मुस्सियान में शुमार थे। 1934 में हज़रत मौलाना अबुल अता साहब जालंधरी ने अहमदी स्कूल खोला तो उसमें मरहूम ने इबतेदाई तालीम हासिल की। फिर 1948 में इंग्लिश स्कूल में दाख़िल हुए, वहां से भी मैट्रिक किया। फिर अलकुद्स यूनिवर्सिटी से एम.ए. की डिग्री नुमायां कामयाबी से हासिल की। बीस साल तक तिजारत में काम किया। उसके बाद ऑडिट के सरकारी विभाग में एक बड़े ओहदे पर काम करने की तौफीक़ मिली। 1995 में वहां से रिटायर हो गए। रिटायरमेंट के बाद वज़ारत-ए-मज़हबी उमूर में उनका नाम इस्लामी उमूर के सदर के तौर पर पेश किया गया। कुछ इस्लामी ममालिक ने अहमदी होने की वजह से आपकी मुखालफत की। इस पर आपने अपने उसूलों और अहमदियत पर क़ायम रहते हुए इससे दस्तकश हो गए।"

"1945 में हज़रत चौधरी ज़फरुल्लाह ख़ान साहब ने क़ौमों के मुत्तहिदा के नुमाइंदे के तौर पर फिलिस्तीन का दौरा किया और इस दौरान मिशन हाउस में भी आए और मरहूम अबू सलाह मुहम्मद सालेह ओदह, जो शरीफ ओदह के दादा थे, उनके घर क़ियाम किया। उस वक्त मरहूम अब्दुल्ला असद साहब पंद्रह साल के थे। आप रोज़ाना चौधरी साहब की ख़िदमत के लिए आते, उन्हें अखबार वग़ैरा भी महिया करते।

मरहूम हमेशा मुबल्लेगीन-ए-कराम के बहुत क़रीब रहे और जनरल सिक्रेटरी, सिक्रेटरी तालीम व तर्बियत, सिक्रेटरी उमूर-ए-खारज़ा, सदर मजलिस अन्सारुल्लाह, सिक्रेटरी सद साला जोबली के अहदों पर जमाअत की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ पाई।

क़बाबीर में मदरसा अहमदीया की तामीर नौ के अज़ीम अल्शान मन्सूबे में मुबल्लिग़ सिलसिला जलालुद्दीन क़मर साहब मरहूम के मुअवन और मददगार रहे। बलंद पैमाना मुअल्लिफ़ थे। अरबी रिसाला 'अल-बशिरा' में सत्तर साल तक दसीयों मज़ामीन लिखे। आपने सूरह क़हफ़ की तफसीर का अंग्रेज़ी से अरबी में तरजुमा भी किया जो मबलिग़ सिलसिला मक़रम फ़ज़लुल्लाह बशीर साहब के दौर में जमाअत में शाए हुआ।

अरब ममालिक में जमाअत मुख़ालिफ़ प्रोपगैंडा हो रहा था कि जमाअत अहमदीया और बहाईत एक ही सिक्के के दो रुख हैं, मोल्ला ने जमाअत को बहाईयों के साथ मिला दिया। अब्दुल्ला असद साहब ने इसका दांतों तोड़ जवाब देते हुए अरबी ज़बान में 'अल्-मुआमरतुल क़ुबरा' के शीर्षक से एक किताब तालीफ़ की। इसी तरह क़बाबीर में जमाअत अहमदीया की तारीख़ के मोजू पर 'अल्-कबाबीर बलदी' के शीर्षक से किताब लिखी। निहायत मुहस्सिन, ग़यूर, अहमदियत और जमाअत से मुताल्लिक़ हर बात पर फख़्र करने वाले जमाअत के सच्चे ख़ादिम थे। आपको मेंबर पार्लियामेंट बनने की पेशकश भी हुई मगर आपने यह कहकर इंकार कर दिया कि सियासत का अपना एक उसूल होता है जबकि मेरा उसूल अहमदियत है। मरहूम के बेटे ख़ालिद अब्दुल्ला कहते हैं कि कुछ वक्तों में वालिद साहब जमाअती कामों में मसरूफ़ होते और वालिदा साहिबा अकठे चाय पीने का या कहीं बाहर जाने का कहतीं, तो वालिद साहब जवाब देते कि मेरे पास अहम जमाअती काम हैं, वो ख़त्म करने के बाद ही और तरफ़ मुअत्तजाह होऊँगा। पहली फौकियत जमाअती काम। पीछे रहने वालों में तीन बेटे और तीन बेटियाँ और चौदह पोते-पोतियाँ शामिल हैं।

अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का सलूक फ़रमाए। दरजात बुलंद फ़रमाए और उनकी नस्ल को भी उनके नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद ये जनाज़े-ए-ग़ायब भी अदा करूंगा।

(अल्-फ़ज़ल इंटरनेशनल 6 दिसंबर 2024)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

ख़ुत्बः जुमअः

उरवा ने कहा:"हे मेरी कौम! मैं राजदूत के रूप में सम्राटों के दरबारों में गया हूं। मैं कैसर, किसरा और नजाशी के दरबार में भी गया हूं।

अल्लाह की कसम! मैंने कभी ऐसा बादशाह नहीं देखा जिसकी वैसी आज्ञा पालन की जाती हो जैसी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञापालन उनके सहाबा (साथियों) में की जाती है।

नबी ए करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : "हम तो युद्ध के इरादे से नहीं आए बल्कि केवल उमरा करने की नीयत से आए हैं। मैं तो इन लोगों के साथ इस समझौते के लिए भी तैयार हूं कि वे मेरे खिलाफ युद्ध बंद कर दें और मुझे बाकी लोगों के लिए स्वतंत्र छोड़ दें।

लेकिन अगर उन्होंने मेरी इस पेशकश को भी ठुकरा दिया और हर हाल में युद्ध की आग भड़काए रखी, तो मुझे उस ज़ात की कसम है जिसके हाथ में मेरी जान है, फिर मैं भी इस मुकाबले से तब तक पीछे नहीं हटूंगा जब तक कि मेरी जान इस रास्ते में कुर्बान न हो जाए या अल्लाह मुझे फतह (जीत) अता न कर दे।"

हज़रत अबूबकर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पीछे बैठे थे, गुस्से में आ गए और उरवा से कहने लगे: "अपने बुत लात को चूमते फिरो, अर्थात उसकी पूजा करो। ये बातें हमसे न करो। क्या हम आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को छोड़ देंगे?"

कुरैश शांति भंग करने की स्थिति पैदा करते रहे, लेकिन पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दरगुजर (क्षमा) से काम लिया। आपने सहाबा से फ़रमाया:

"आओ और मेरे हाथ पर हाथ रखकर (जो इस्लाम में बैअत का तरीका है) यह वचन दो कि तुम में से कोई भी पीठ नहीं दिखाएगा और अपनी जान जोखिम में डाल देगा, लेकिन किसी भी हाल में अपनी जगह नहीं छोड़ेगा।"
बैअत (प्रतिज्ञा) का दृश्य:

जब बैअत हो रही थी, तो पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपना बायां हाथ अपने दाएं हाथ पर रखकर फ़रमाया :
"यह उस्मान का हाथ है, क्योंकि अगर वह यहां होते, तो इस पाक सौदे में किसी से पीछे न रहते। लेकिन इस समय वह अल्लाह और उसके रसूल के काम में व्यस्त हैं।"

सहाबा का वर्णन : सहाबा ए किराम बैअत ए रिज़वान का वर्णन करते हुए कहा करते थे कि यह बैअत मौत के वचन की बैअत थी। अर्थात यह वचन था कि हर मुसलमान इस्लाम और इस्लाम की इज्जत के लिए अपनी जान पर खेल जाएगा, लेकिन पीछे नहीं हटेगा।

इस बैअत की खास बात यह थी कि यह वचन केवल जुबान से लिया गया एक अस्थायी जोश का इज़हार नहीं था, बल्कि दिल की गहराइयों से उठी आवाज़ थी, जिसके पीछे मुसलमानों की सारी ताकत एक बिंदु पर केंद्रित थी।

ग़ज़वा-ए-हुदैबिया के हालात : ग़ज़वा-ए-हुदैबिया के हालात और बैअत ए रिज़वान की तफसीलात का प्रभावी वर्णन, साथ ही दुनिया के हालात के मद्देनज़र दुआ करने और सावधानी बरतने की याददेहानी।

सबसे अहम बात यही है कि अल्लाह तआला का क़रीब हासिल करने की कोशिश करें। उसकी रज़ा (संतोष) हासिल करने की कोशिश करें। उससे ताल्लुक (संबंध) पैदा करने की कोशिश करें, और इसमें आगे बढ़ने की कोशिश

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 22 नवंबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हुदेबिया के बारे मे यह वर्णन हो रहा है। इस संदर्भ में, बुदैल बिन वरका ख़ुज़ाई और अन्य क़ुरैश के दूतों का हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आने का भी वर्णन मिलता है। इसकी तफ़सील में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह वर्णन किया है :

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हुदेबिया की वादी में पहुंचकर वहां के चश्मे के पास ठहरे। जब सहाबा ने वहां डेरा डाल लिया, तो क़बीला ख़ुज़ा का एक प्रसिद्ध प्रमुख, बुदैल बिन वरका, जो आसपास के इलाक़े में रहता था, अपने कुछ साथियों के साथ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलने आया। उसने अर्ज़ किया, 'मक्का के प्रमुख युद्ध के लिए तैयार खड़े हैं और वे आपको मक्का में दाखिल नहीं होने देंगे।'

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : 'हम युद्ध की नीयत से नहीं आए हैं, बल्कि केवल उमरा करने की नीयत से आए हैं। अफ़सोस की बात है कि क़ुरैश-ए-मक्का को युद्ध की आग ने जलाकर राख कर दिया है, लेकिन फिर भी ये लोग बाज़ नहीं आते। मैं तो इनसे इस समझौते के लिए भी तैयार हूं कि वे मेरे खिलाफ़ जंग बंद कर दें और मुझे दूसरे लोगों के लिए आज़ाद छोड़ दें। लेकिन अगर उन्होंने मेरी इस तजवीज़ को भी ठुकरा दिया और हर हाल में युद्ध की आग भड़काए रखी, तो मुझे उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं भी इस मुक़ाबले से तब तक पीछे नहीं हटूंगा जब तक या तो मेरी जान इस रास्ते में क़ुर्बान न हो जाए या अल्लाह मुझे फ़तह न अता करे।'

अगर मैं इनके मुक़ाबले में आकर मिट गया तो क़िस्सा ख़त्म हुआ, लेकिन अगर अल्लाह ने मुझे फ़तह दी और मेरे लाए हुए दीन को ग़ालिब कर दिया, तो फिर मक्का वालों को भी ईमान लाने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए।"

बुदैल बिन वरका पर आपकी इस खालिस और दर्दमंदाना तक़रीर का गहरा असर हुआ। उसने आपसे अर्ज़ किया कि "आप मुझे कुछ मोहलत दें ताकि मैं मक्का जाकर आपका पैग़ाम पहुंचाऊं और सुलह की कोशिश करूं।" आपने इजाज़त दी, और बुदैल अपने क़बीले के कुछ लोगों को लेकर मक्का की ओर रवाना हो गया।

जब बुदैल बिन वरका मक्का पहुंचा, तो उसने क़ुरैश को जमा करके कहा : "मैं उस शख़्स अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से आ रहा हूं। उन्होंने मेरे सामने एक तजवीज़ पेश की है। अगर आप इजाज़त दें तो मैं इसका वर्णन करूं।"

इस पर क़ुरैश के जोशीले और ग़ैर-ज़िम्मेदार लोग कहने लगे : "हम उस शख़्स की कोई बात सुनने को तैयार नहीं हैं," अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की कोई बात सुनने को तैयार नहीं हैं। "लेकिन अहल-ए-राय और भरोसेमंद लोगों ने कहा: 'हां, हां, जो तजवीज़ भी है, हमें बताओ।'"

इस पर बुदैल ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पेश की गई तजवीज़ का इआदा किया। इस पर एक शख़्स, उरवा बिन मसऊद नामी, जो क़बीला सकीफ़ का एक बहुत प्रभावशाली प्रमुख था और उस वक्त मक्का में मौजूद था, खड़ा हुआ और पुराने अरबी अंदाज़ में क़ुरैश से कहने लगा :

"हे लोगो! क्या मैं तुम्हारे बाप की जगह नहीं हूं?" उन लोगों ने कहा: "हां।"

फिर उसने कहा : "क्या तुम लोग मेरे बेटों की तरह नहीं हो?"

उन्होंने कहा: "हां। हम भी बेटों की तरह हैं। "तो क्या तुम्हें मुझ पर किसी तरह का अविश्वास है?"

क़ुरैश ने कहा: "हरगिज़ नहीं।"

उसने कहा: "तो फिर मेरी यह राय है कि इस शख़्स (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने तुम्हारे सामने एक उम्दा बात पेश की है। तुम्हें चाहिए कि इस तजवीज़ को क़बूल कर लो और मुझे इजाज़त दो कि मैं तुम्हारी तरफ़ से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाकर और बातचीत करूं।"

क़ुरैश ने कहा: "बेशक, आप जाएं और बातचीत करें।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो, एम. ए, पृष्ठ 756-755)

उरवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में गया। इसकी तफ्सील में लिखा है कि उरवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहने लगा, 'हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैंने क़अब बिन लुई और आमिर बिन लुई को हुदैबिया के पानी के पास छोड़ा है। उनके साथ दूध देने वाली ऊंटनियां हैं। उन्होंने अहाबिश (अहाबिश क़ुरैश के हलीफ़ क़बीले थे, जिन्होंने हब्शी नाम की पहाड़ी के दामन में हलफ लिया था, इसलिए इन्हें अहाबिश कहा जाने लगा) और उनके पैरोक़ारों को बुलाया है।'

वह कहने लगा, 'उन्होंने चीतों की खालें पहन रखी हैं, अर्थात उन काफ़िरों ने चीतों की खालें पहन रखी हैं, और जंग के लिए तैयार हैं। उन्होंने कसम खाई है कि वे बैतुल्लाह और आपके बीच रास्ता नहीं छोड़ेंगे जब तक कि आप उन्हें हलाक न कर दें। यानी, ररसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें हलाक कर दें।'

वह कहने लगा, 'बेशक आप और जिनके साथ आप जंग करेंगे, दो हालात में से एक तय है। हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! या तो आप अपनी कौम को हलाक कर देंगे, और आज तक ये नहीं सुना गया कि किसी आदमी ने अपनी कौम को हलाक किया हो और अपने घरवालों को हलाक किया हो। या वे लोग जो आपके साथ हैं, आपको रुसवा कर देंगे। अर्थात उसने इस तरह डराने की कोशिश की कि ये लोग जो आपके साथ हैं, बुज़दिल हैं।'

वह कहने लगा, 'अल्लाह की कसम! मुझे जो मुख आपके साथ नज़र आ रहे हैं, उनमें से ज्यादातर भागने वाले ही लगते हैं। और एक रिवायत में है कि वे लोग ऐसे हैं जिनके चेहरों को मैं नहीं पहचानता, न उनके नसब (वंश), न उनके अख़लाक (चरित्र)।

मुझे लगता है कि वे आपको छोड़कर भाग जाएंगे। और एक रिवायत में है कि जैसे मैं देख रहा हूं, अगर आपने क़ुरैश से जंग की, तो ये लोग आपको क़ुरैश के हवाले कर देंगे।'

इस तरह उसने ररसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को डराने की और प्रभावित करने की कोशिश की। उसने कहा, 'और वे आपको क़ैदी बना लेंगे। इससे ज्यादा सख्त और क्या हो सकता है?'

इस पर, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे बैठे थे, गुस्सा हो गए और कहने लगे, 'अपने बुत लात को चूमते फिरो अर्थात उसकी पूजा करो। ये बातें हमसे मत करो। क्या हम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ जाएंगे?'"

"तो उरवा ने पूछा, 'यह कौन है?' लोगों ने जवाब दिया, 'यह अबू बकर हैं।' उरवा ने कहा, 'अल्लाह की कसम! अगर मुझ पर तेरा एक एहसान न होता, तो मैं इसका ज़रूर जवाब देता।' किसी ज़माने में उरवा पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एहसान था। इसके बारे में लिखा है कि उरवा ने दीयत (क़त्ल का जुर्माना) अदा करने के लिए मदद मांगी थी। किसी का क़त्ल कर दिया था, उसकी दीयत देनी थी। मदद मांगी तो किसी ने दो ऊंट, किसी ने तीन ऊंट देकर मदद की, जबकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दस ऊंट देकर मदद की। यह वही एहसान था जो हज़रत अबू बकर ने उरवा पर किया था।

इसके बाद उरवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें करने लगा। जब वह बातें करता, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दाढ़ी को हाथ लगाता। हज़रत मुगीरा बिन शु'बा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तलवार लिए खड़े थे और अपने सिर पर खुद (लोहे का हेलमेट) पहने हुए थे, उरवा की हरकत पर नज़र रख रहे थे।

जब उरवा ने आगे बढ़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दाढ़ी को छूने के लिए हाथ बढ़ाया, तो हज़रत मुगीरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

अपनी तलवार के कोने से उसका हाथ हटा दिया और कहा, 'रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दाढ़ी से अपना हाथ दूर रखो, इससे पहले कि तलवार तुम तक पहुंचे, क्योंकि किसी मुश्रिक (मूर्तिपूजक) के लिए यह उचित नहीं है कि वह आपकी दाढ़ी को छुए।'

उरवा ने अपना सिर उठाया और पूछा, 'यह कौन है?' लोगों ने कहा, 'मुगीरा बिन शु'बा।' एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'यह तुम्हारा भतीजा मुगीरा बिन शु'बा है।' उरवा ने कहा, 'हे बदअहद (वचनभंग करने वाले)!' उरवा ने मुगीरा से कहा, 'क्या मैंने तेरी बदअहदी की इस्लाह (सुधार) की कोशिश नहीं की थी?'

जिस घटना का वह वर्णन कर रहा था, उसकी तफ्सील यह है कि हज़रत मुगीरा, जाहिलियत के दौर में कुछ लोगों के साथ गए और उन्हें क़त्ल कर दिया और उनका माल लेकर लौट आए। इसके बाद उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'जहाँ तक इस्लाम का सवाल है, मैं उसे क़बूल करता हूँ, लेकिन जहाँ तक उस माल का सवाल है, मेरा उससे कोई लेना-देना नहीं है।' यह सहिह बुखारी की रिवायत है।

बहरहाल, उरवा ने शायद इस मामले में मुगीरा की कोई मदद की होगी। इसके बाद उरवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा को गौर से देखने लगा। उसने देखा कि जब भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थूकते, सहाबा उसे अपने हाथों में लेकर अपने चेहरे और सीने पर मल लेते। जब आप किसी चीज़ का हुक्म देते, सहाबा तुरंत उसे अंजाम देते। जब आप वुज़ू करते, तो सहाबा वुज़ू के पानी को हासिल करने के लिए टूट पड़ते। आपके बदन का कोई बाल नीचे नहीं गिरने देते, बल्कि उसे संभाल लेते।

उरवा ने देखा कि सहाबा आपकी मौजूदगी में अपनी आवाज़ें धीमी रखते और आपसे अदब की वजह से आपकी तरफ सीधी नज़र से नहीं देखते। जब उरवा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें खत्म कीं, तो आपने उससे वही बात कही जो आपने बदैल बिन वरक़ा से कही थी और एक तयशुदा मुद्दत तक सुलह की पेशकश की।

फिर उरवा क़ुरैश के पास गया और कहने लगा:

"हे मेरी कौम! मैं राजदूत के तौर पर बादशाहों के दरबारों में गया हूं। क़ैसर, किसरा और नजाशी के दरबार में। अल्लाह की कसम! मैंने कभी ऐसा कोई बादशाह नहीं देखा जिसकी वैसी आज्ञापालन हो जैसी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उनके सहाबा के बीच होती है।

कहाँ तो मैं यहाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन काफ़िरों से डराने के लिए आया था, और कहाँ यह नज़ारे देखे तो दिल पर गहरा असर हुआ। मैंने वही बात इन काफ़िरों से जाकर भी कही।

उसने कहा, अल्लाह की कसम! मैंने ऐसा कोई बादशाह नहीं देखा जिसके साथी उसकी इतनी इज़्ज़त करते हों जितनी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा उनकी करते हैं। अल्लाह की कसम! उनके जैसा कोई और नहीं। जब वह थूकते हैं तो उनके साथी उसे अपने हाथ में ले लेते हैं, फिर उसे अपने चेहरे और सीने पर मल लेते हैं। जब वह कोई हुक्म देते हैं तो उसे तुरंत पूरा करते हैं। जब वह वुज़ू करते हैं तो उनके वुज़ू के पानी को लेने के लिए टूट पड़ते हैं। उनके बाल नीचे नहीं गिरने देते बल्कि उसे संभाल लेते हैं।

उनके सामने उनके साथी धीमे स्वर में बोलते हैं और उनकी इज़्ज़त में उनकी ओर आंख उठाकर नहीं देखते। कोई भी शख्स बिना इजाज़त के बात नहीं करता। जब वह इजाज़त देते हैं, तब सहाबा बात करते हैं। अगर इजाज़त न हो, तो हर कोई खामोश रहता है।

उसने कहा, 'मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हारे सामने एक भलाई की बात रखी है, इसलिए इसे स्वीकार कर लो।' उसने यह भी कहा, 'मैंने अपनी कौम को आगाह कर दिया है। जान लो, अगर तुमने उनके साथ तलवार उठाने की ठान ली, तो वह भी तुम्हारे खिलाफ तलवार का इस्तेमाल करेंगे। अगर तुमने उनके साहब (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रोक दिया, तो मैंने उनकी कौम को देखा है। वह इस बात की परवाह नहीं करेंगे कि उनके साथ क्या होता है।

अल्लाह की कसम! मैंने उनके साथ ऐसी औरतों को भी देखा है जो उन्हें हमारे हवाले नहीं करेंगी। हे मेरी कौम! अपनी राय बदल लो और उनके पास जाओ। वह जो बात तुम्हारे सामने रखते हैं, उसे स्वीकार कर लो। यानी, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुलह की पेशकश की है या उमरा करने की बात की है, इसे मान लो।

उसने कहा, 'मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूं। साथ ही, मुझे यह भी डर है कि तुम्हें उस शख्स के खिलाफ मदद नहीं मिलेगी जो केवल बैतुल्लाह की ज़ियारत (तीर्थयात्रा) के लिए आया है। उसके पास क़ुर्बानी के जानवर हैं जिन्हें वह ज़बह करेंगे और फिर लौट जाएंगे।'

इस पर क़ुरैश ने कहा, 'हे अबू याफूर!' अर्थात उरवा से कहा, 'यह बात मत कहो। क्या तेरे अलावा किसी और ने भी यह बात की है? इसके बजाय, हम इस साल उन्हें वापस भेज देंगे और वे अगले साल आएंगे।

तो उरवा ने कहा, 'तुम्हें इस पर बड़ी मुसीबत उठानी पड़ेगी।' फिर उरवा और उसके साथी ताइफ़ की ओर रवाना हो गए।

(सुबलुल् -हुदा वल् -रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 45-44, दारुल कुतुब अल्-इल्मियाह, बेरूत)

(सहीह बुखारी, किताब अल्-शुरूत, बाब अल्-शुरूत फी अल्-जिहाद, 2732-2731)

(सीरत एन्साइक्लोपीडिया, भाग 8, पृष्ठ 93, मुद्रण: दारुस्सलाम)

(मुस्नद अहमद, साथ में हाशिया भाग 11, पृष्ठ 207, मक्तबा इदारा अल् इस्लामियाह)"

हज़रत मुस्लेह मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी सुलह हुदैबिया के वाक़ियात वर्णन किए हैं। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब काबा का तवाफ़ करने के लिए तशरीफ ले गए, तो काफ़िर-ए-मक्का ने खबर पाकर अपने एक सरदार को आपकी तरफ़ रवाना किया कि वह जाकर कहे कि इस साल आप तवाफ़ के लिए न आएं। वह सरदार आपके पास पहुंचा और बातचीत करने लगा। बात करते वक्त उसने आपकी मुबारक दाढ़ी को हाथ लगाया और कहा कि आप इस बार तवाफ़ न करें और किसी अगले साल पर मुल्तवी कर दें।"

हज़रत मुस्लेह मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह हाथ लगाना किसी बेअदबी की वजह से नहीं था, बल्कि "एशिया के लोगों में दस्तूर है कि जब वह किसी से अपनी बात मनवाना चाहते हैं, तो मिन्नत के तौर पर दूसरे की दाढ़ी को हाथ लगाते हैं या अपनी दाढ़ी को हाथ लगाकर कहते हैं कि देखो! मैं बुज़ुर्ग हूं और क़ौम का सरदार हूं, मेरी बात मान लो।"

इसलिए, उस सरदार ने भी मिन्नत के तौर पर आपकी दाढ़ी को हाथ लगाया। यह देखकर एक सहाबी आगे बढ़े और अपनी तलवार के दस्ते से उस सरदार को मारते हुए कहा : "अपने नापाक हाथ पीछे हटाओ।"

सरदार ने तलवार का दस्ता मारने वाले को पहचान कर कहा, "तुम वही हो जिस पर मैंने फलां अवसर पर एहसान किया था।" यह सुनकर वह सहाबी खामोश हो गए और पीछे हट गए।

सरदार ने फिर मिन्नत के तौर पर आपकी दाढ़ी को हाथ लगाया। सहाबा कहते हैं कि हमें उस सरदार के इस तरह हाथ लगाने पर सख्त गुस्सा आ रहा था, लेकिन उस वक्त हमें कोई ऐसा शख्स नज़र नहीं आता था जिस पर उस सरदार का एहसान न हो।

यानी उस काफ़िर सरदार ने बहुत से लोगों पर एहसान किया हुआ था। "और उस वक्त हमारा दिल चाहता था कि काश! हम में से कोई ऐसा शख्स होता जिस पर उस सरदार का कोई एहसान न हो।"

इतने में एक शख्स हम में से आगे बढ़ा जो सर से पांव तक खुद और ज़िरह में लिपटा हुआ था और बड़े जोश के साथ सरदार से मुखातिब होकर कहने लगा, "हटा लो अपना नापाक हाथ।"

यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे जिन्होंने यह कहा। सरदार ने जब उन्हें पहचाना तो कहा, "हां, मैं तुम्हें कुछ नहीं कह सकता क्योंकि तुम पर मेरा कोई एहसान नहीं है।"

(हिंदुस्तानी उलझनों का आसान तरीन हल, अनवारुल् उलूम, भाग 18, पृष्ठ 560)

फिर हुलैस बिन अल्क़मा किनानी, जो अहाबीश का सरदार था (जैसा कि मैंने बताया है कि अहाबीश, क़ुरैश के हलीफ क़बीलों का नाम है और उन्होंने हबशी नामक पहाड़ी के दामन में हलफ लिया था, इसीलिए उन्हें अहाबीश कहा जाता है), ने कहा :

"मुझे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाने दो।"

तो क़ुरैश ने कहा, "जाओ।" जब उसने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऊंचाई से देखा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "यह फलां शख्स है जो ऐसे क़बीले से ताल्लुक रखता है जो क़ुर्बानी के जानवरों का सम्मान करते हैं।

फिर आपने सहाबा से फ़रमाया, "उसे दिखाने के लिए क़ुर्बानी के जानवरों को आगे गुज़ारो।"

सहाबा ने जानवरों को आगे कर दिया। जब उसने वादी के किनारे उन जानवरों को देखा जिनकी गर्दन में हार थे, और उनके बाल झड़ चुके थे क्योंकि वह हार लंबे वक्त से उनके गले में पड़े थे। जानवर बार-बार आवाज़ें निकाल रहे थे।

सहाबा ने तलबिया कहते हुए उनका इस्तकबाल किया और वह आधा महीना से वहां मुकीम थे। उन्होंने कोई खुशबू नहीं लगाई थी और उनके बाल भी बिखरे हुए थे।
जब उसने यह देखा, तो कहने लगा:"

सुब्हानअल्लाह! इन लोगों को बैतुल्लाह से रोका जाना मुनासिब नहीं।" तुरंत उसका दिल नर्म हो गया।

उसने कहा : "अल्लाह ने इस बात की इजाज़त नहीं दी कि लख़्म, जुज़ाम, किन्दा और हिम्यर क़बीलों को तो हज करने दिया जाए और अब्दुल मुत्तलिब के बेटे को रोका जाए। यह मुनासिब नहीं है कि क़ुरैश उन्हें बैतुल्लाह से रोकें। रब-ए-काबा की कसम!

क़ुरैश तबाह हो जाएंगे।" बेशक ये लोग उमरा करने के लिए आए हैं। उसने मुसलमानों के समर्थन में यह बात कही। ये बातें सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह की कसम! हेबनू किनाना के भाई, बिल्कुल ऐसी ही बात है।" आपने उसे यह जवाब दिया। वह इतना प्रभावित हुआ कि क़ुरैश की तरफ़ जाकर कहने लगा, "मैंने ऐसी चीज़ देखी है जिसकी वजह से मुसलमानों को रोकना जायज़ नहीं है। मैंने जानवरों को देखा है जिनकी गर्दन में हार थे। हार लंबे समय से उनकी गर्दन में पड़े थे जिससे उनकी गर्दन के बाल झड़ चुके थे। लोगों के सिर बिखरे हुए थे और यह सब इसलिए था कि वे बैतुल्लाह का तवाफ़ कर सकें। अल्लाह की कसम! हमने इस बात पर तुमसे कोई समझौता नहीं किया था।"

उसने काफ़िरों से कहा, "हमने तुमसे इस बात पर कोई समझौता नहीं किया था और न ही यह तय किया था कि तुम हर उस शख्स को रोकोगे जो इस बैतुल्लाह की इज्ज़त और उसकी पवित्रता को कायम करने वाला हो और उसका हक अदा करने वाला हो। और जो क़ुर्बानी के जानवर लेकर उन्हें उनके मकाम तक ले जाना चाहता है।

अल्लाह की कसम! उस ज़ात की, जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, तुम उनके रास्ते को काबा तक जाने के लिए खाली कर दो वरना मैं अपने लोगों को लेकर तुम्हारा साथ छोड़कर चला जाऊंगा।"

उसने कहा, "उन्हें जाने की, उमरा करने की इजाज़त दो।"

क़ुरैश ने कहा, "हे हुलैस! तुम खामोश रहो ताकि हम अपनी पसंद की शर्तें उनसे मनवा लें।"

और एक रिवायत में है कि क़ुरैश ने कहा, "तू बैठ जा, तू अराबी अर्थात देहाती है, तुझे कुछ पता नहीं है। तूने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो कुछ सुना और देखा है वह मक्रो-फ़रेब है। (नऊज़ो बिल्लाह)"

(सबलुल्-हुदा वल् रिशाद, भाग5, पृष्ठ 45, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

इस सफर में हज़रत कअब बिन उर्वाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए एहराम में सिर मुंडवाने की रियायत का वर्णन मिलता है।

इसकी तफसील कुछ इस तरह वर्णन की गई है कि हज़रत कअब बिन उर्वाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है :

"हम हुदैबिया मकाम पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे। हम एहराम की हालत में थे। मुशरिकीन ने हमारा घेराव कर रखा था। मेरे बाल लंबे थे और जुएं मेरे चेहरे पर गिरने लगीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे पास से गुज़रे। आपने फ़रमाया, 'क्या तुम्हारे सिर की जुएं तुम्हें तकलीफ दे रही हैं?' मैंने कहा, 'हां।

आपने फ़रमाया, 'यह मेरा गुमान न था कि तुम्हारी यह तकलीफ इतनी बढ़ जाएगी।' आपने मुझे सिर मुंडवाने का हुक्म दिया कि तुम पहले ही सिर मुंडवा सकते हो।"

अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई :

فَمَنْ كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِۦٓ أَذًى مِّن رَّأْسِهِۦ فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ

(अल्-बक़रा : 196)

"फिर अगर तुममें से कोई बीमार हो, या उसके सिर में कोई तकलीफ हो, तो कुछ रोज़े रख कर, या सदक़ा देकर, या क़ुर्बानी करके फ़िद्या दे।" इस तरह की हालत में, तकलीफ की सूरत में, सिर मुंडवाया जा सकता है। (सबुलुल् हुदा वल्-रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 35, दारुलकुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

इस दौरान क़ुरैश द्वारा मिक़रज़ बिन हफ़्स को दूत बनाकर भेजने का वर्णन जैसा कि पहले वर्णन हुआ है, क़ुरैश से अनुमति लेकर विभिन्न लोग दूत बनकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आते थे। इन्हीं में मिक़रज़ बिन हफ़्स का भी वर्णन है। उसने भी क़ुरैश से कहा कि मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाने दो। जब वह आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे देखकर फ़रमाया : "यह एक धोखेबाज़ व्यक्ति है," और कुछ रिवायतों में "फ़ाजिर" का लफ़्ज़ भी आता है। जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया तो आपने उससे वही बात की जो उरवा और बुदैल से की थी। फिर वह अपने साथियों के पास लौट गया और उन्हें वह बातें बताईं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे की थीं

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हज़रत खिराश बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ुरैश की तरफ़ दूत बनाकर भेजने का वर्णन

अर्थात आपने अपना भी एक दूत भेजा। मुहम्मद बिन इसहाक लिखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने ऊंट पर हज़रत खिराश बिन उमैया को क़ुरैश की तरफ़ भेजा। उस ऊंट का नाम सअलब था ताकि क़ुरैश के लोगों तक वह संदेश पहुँचा सकें जिसके लिए आप तशरीफ़ लाए थे। लेकिन अकरमा बिन अबू जहल ने ऊंट की टांगें काट दीं। अिकरमा ने इस दूत की हत्या का भी इरादा किया, लेकिन अहाबिश ने उसे रोक दिया। इसके बाद उन्होंने हज़रत खिराश को जाने दिया, और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास वापस आ गए और जो कुछ उनके साथ हुआ था, वह आपको बता दिया।

(सबुलुल् हुदा वल्-रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 46, दारुलकुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

बहरहाल क़ुरैश शांति को भंग करने की स्थिति पैदा करते रहे, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमेशा सब्र और दरगुज़र फ़रमाया।

इसकी तफसील में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक जगह इस तरह लिखा है:

"क़ुरैश-ए-मक्का ने सिर्फ़ इतना ही नहीं किया, बल्कि अपने जोश में अंधे होकर इस बात का भी इरादा किया कि अब जबकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा मक्का के इतने करीब और मदीना से इतनी दूर आ गए हैं, तो उन पर हमला करके जहां तक हो सके नुकसान पहुँचाया जाए। चूंकि इस मकसद के लिए उन्होंने 50-40 आदमियों की एक पार्टी हुदैबिया की तरफ़ रवाना की। इस बातचीत की आड़ में, जो उस समय दोनों पक्षों में चल रही थी, इन लोगों को हिदायत दी गई कि इस्लामी कैंप के चारों तरफ़ घूमते रहें और मौका पाकर मुसलमानों को नुकसान पहुँचाते रहें।

"बल्कि कुछ रिवायतों से यहां तक पता चलता है कि यह लोग संख्या में अस्सी थे और इस अवसर पर क़ुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हत्या की भी साजिश रची थी। मगर बहरहाल, अल्लाह के फ़ज़ल से मुसलमान अपनी जगह चौकन्ने थे। इस वजह से क़ुरैश की इस साजिश का भेद खुल गया और ये लोग सभी के सभी गिरफ़्तार कर लिए गए। मुसलमानों को अहल-ए-मक्का की इस हरकत पर, जो अशहर-ए-हरम (पवित्र महीने) में और फिर लगभग हरम के इलाके में की गई, काफ़ी गुस्सा था। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन लोगों को माफ़ कर दिया और सुलह की बातचीत में कोई रुकावट नहीं आने दी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए, पृष्ठ 760-759)

फिर इस का वर्णन मिलता है। यह एक बहुत प्रसिद्ध घटना है जब ज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दूत बनाकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भेजा।

इमाम बेहकी ने उर्वाह से रिवायत की है कि फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन अल्-खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया ताकि उन्हें क़ुरैश के पास भेजें। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, "हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क़ुरैश मेरी दुश्मनी से वाकिफ़ हैं, इसलिए मुझे अपनी जान का ख़ौफ़ है और बनी अदी में से कोई ऐसा नहीं है जो मेरी हिफाज़त कर सके।" और कहने लगे, "हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अगर आप चाहें तो मैं चला जाता हूँ।" तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे कुछ न कहा। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मैं आपको एक ऐसे शख्स के बारे में बताता हूँ, जिसकी मक्का में मुझसे ज़्यादा इज़्ज़त है और उसका बड़ा परिवार है, जो उसकी हिफाज़त करेगा और वह आपके संदेश को जो आप चाहते हैं, पहुंचा देगा। और वह शख्स हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने किसी जान के ख़ौफ़ से यह बात नहीं कही थी। उन्होंने कहा था, "मैं जाऊँगा तो मुझे मार देंगे और जो संदेश पहुँचाने का मकसद है, वह पूरा नहीं होगा। एक फितना पैदा हो जाएगा, इसलिए बेहतर यही है कि मैं न जाऊँ, हज़रत उस्मान जाएं।" तो बहरहाल, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया, "तुम क़ुरैश के पास जाओ और उन्हें ख़बर दो कि हम लड़ाई करने के लिए नहीं आए, बल्कि उमरा करने के लिए आए हैं।"

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 46, दारुल कुतुब अल्-इल्मीया, बेरूतसकी तफ़सील सीरत ख़ातमन नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह लिखी है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने... हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से इर्शाद फ़रमाया कि वह मक्का जाएं और क़ुरैश को मुसलमानों के शांतिपूर्ण इरादों और उमरा की नीयत से आगाह करें और आपने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी तरफ़ से एक तहरीर भी लिखकर दी जो क़ुरैश के सरदार के नाम थी। इस तहरीर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने आने की मक्सद बयान की और क़ुरैश को यकीन दिलाया कि हमारी नीयत सिर्फ़ एक इबादत अदा करना है और हम शांतिपूर्ण रूप में उमरा करके वापस लौट जाएंगे। आपने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से यह भी फ़रमाया कि मक्का में जो कमज़ोर मुसलमान हैं, उनसे मिलकर उनकी हिम्मत बढ़ाना और उन्हें कहना कि थोड़ा और सब्र रखें, अल्लाह जल्दी सफलता का दरवाज़ा खोलेगा।" बहुत यकीन था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को।

"यह संदेश लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का गए और अबू सुफ़यान से मिलकर जो उस ज़माने में मक्का के रईस-ए-आज़म थे और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़रीबी रिश्तेदार भी थे, अहल-ए-मक्का के एक आम जमाअत में पेश हुए। इस जमाअत में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तहरीर पेश की, जो विभिन्न रुआसा क़ुरैश ने अलग-अलग भी देखी, मगर बावजूद इसके सब लोग अपनी ज़िद पर कायम रहे कि बहरहाल मुसलमान इस साल मक्का में दाख़िल नहीं हो सकते। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ोर देने पर क़ुरैश ने कहा कि अगर तुम्हें ज्यादा शौक़ है, तो हम तुम्हें ज़ाती तौर पर तवाफ़-ए-बैतुल्लाह का मौक़ा दे देते हैं।" हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ऑफ़र की गई कि आप तवाफ़ कर लें। "मगर इससे ज़्यादा नहीं।" हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "यह कैसे हो सकता है कि रसूलुल्लाह मक्का से बाहर रोके जाएं और मैं तवाफ़ करूँ?" मगर क़ुरैश किसी तरह न माने और आख़िरकार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मायूस होकर वापस आने की तैयारी करने लगे। इस अवसर पर मक्का के शरारती लोगों को यह शरारत सूझी कि उन्होंने शायद इस ख़्याल से कि इस तरह हमें सुलह में ज़्यादा मुफ़ीद शर्तें मिल सकती हैं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों को मक्का में रोक लिया। इस पर मुसलमानों में यह अफ़वाह फैल गई कि अहल-ए-मक्का ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल कर दिया है।"

यह खबर जब पहुँची तो फिर वहाँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह बैअत ली जो बैअत-ए-रिज़वान कहलाती है। इसकी तफ़सील में लिखा है कि "यह खबर", अर्थात हज़रत उस्मान की शहादत की खबर, "हुदैबिया में पहुँची तो मुसलमानों में सख्त जोश पैदा हुआ क्योंकि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दामाद और मक्के के सबसे इज़्ज़तदार सहाबी थे और मक्का में बतौर इस्लामी दूत के गए थे। और ये दिन भी अशहुर-ए-हरम के थे और फिर मक्का ख़ुद हरम का इलाका था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फौरन समस्त मुसलमानों में एलान करके उन्हें एक बाबूल (कीकर) के दरख़्त के नीचे जमा किया। और जब सहाबी जमा हो गए तो आपने इस खबर का ज़िक्र करके फ़रमाया कि "अगर ये सूचना सही है तो खुदा की क़सम! हम इस जगह से इस वक्त तक नहीं टलेंगे कि उस्मान का बदला ना ले लें।" फिर आपने सहाबियों से फ़रमाया "आओ और मेरे हाथ पर हाथ रख कर (जो इस्लाम में बैअत का तरीका है) यह अहद करो कि तुम में से कोई शख्स पीठ नहीं दिखाएगा और अपनी जान पर खेल जाएगा परंतु किसी हालत में अपनी जगह नहीं छोड़ेगा।"

इस एलान पर सहाबी बैअत के लिए इस तरह लपके कि एक-दूसरे पर गिरते पड़े थे। और उन चौदह पंद्रह सौ मुसलमानों का (जो उस वक्त इस्लाम की सारी पूंजी थे) एक-एक फर्द अपने महबूब आक़ा के हाथ पर गोया दूसरी बार बिक गया।

जब बैअत हो रही थी, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना बायाँ हाथ अपने दाहिने हाथ पर रख कर फ़रमाया "यह उस्मान का हाथ है क्योंकि अगर वह यहाँ होते तो इस मुक़द्दस सौदे में किसी से पीछे न रहते, लेकिन इस वक्त वह खुदा और उसके रसूल के काम में मसरूफ हैं।" इस तरह यह बिजली जैसा मंजर अपने इख़्तिताम को पहुँचा।

इस्लामी तारीख़ में यह बैअत "बैअत-ए-रिज़वान" के नाम से मशहूर है। अर्थात वह बैअत जिसमें मुसलमानों ने खुदा की पूरी रज़ा का इनाम हासिल किया।

क़ुरआन शरीफ ने भी इस बैअत का खास तौर पर ज़िक्र किया है। चूंकि फ़रमाता है :

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا

(अल् -फतह : 19)

अर्थात "अल्लाह तआला खुश हो गए मुसलमानों से जब कि हे रसूल! वे एक दरख़्त के नीचे तुझसे बैअत कर रहे थे, क्योंकि इस बैअत से उनके दिलों का छुपा हुआ इख्लास खुदा के ज़ाहिरी इल्म में आ गया। तो खुदा ने भी उन पर सकीना (शांति) नाज़िल की और उन्हें एक क़रीब की फ़तह का इनाम दिया।"

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हु भी हमेशा इस बैअत को बड़े फख़्र से और मुहब्बत के साथ बयान किया करते थे और उनमें से अकसर बाद में आने वाले लोगों से कहा करते थे कि तुम तो मक्का की फ़तह को फ़तह समझते हो। "बड़ा समझते हो", मगर हम "बैअत-ए-रिज़वान" ही को फ़तह समझते थे। और इसमें कोई शक नहीं कि यह बैअत अपने कवायफ़ के साथ मिलकर एक निहायत अज़ीम अल्शान फ़तह थी। न सिर्फ़ इसलिये कि इसने आगे की फतहों का दरवाज़ा खोल दिया बल्कि इसलिये भी कि इससे इस्लाम की उस जान फ़रोशाना रूह का जो दीन मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का गोया केंद्रीय बिंदु है एक निहायत शानदार रंग में इज़हार हुआ और फ़िदायियन-ए-इस्लाम ने अपने अमल से बता दिया कि वे अपने रसूल और इस रसूल की लाई हुई सच्चाई के लिए हर मैदान में और उस मैदान के हर क़दम पर मौत और ज़िन्दगी के सौदों के लिए तैयार हैं।

इसी लिए... सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हु बैअत-ए-रिज़वान का वर्णन करते हुए कहा करते थे कि यह बैअत मौत के अहद की बैअत थी, अर्थात इस अहद की बैअत थी कि हर मुसलमान इस्लाम की ख़ातिर और इस्लाम की इज़्ज़त की ख़ातिर अपनी जान पर खेल जाएगा मगर पीछे नहीं हटेगा। और इस बैअत का खास पहलू यह था कि यह अहद ओ पैमाना सिर्फ़ मुँह का एक वक़ती इक़रार नहीं था जो आर्ज़ी जोश की हालत में कर दिया गया हो बल्कि दिल की गहराईयों की आवाज़ थी जिसके पीछे मुसलमानों की सारी ताक़त एक नुक्ता-ए-वा हद पर जमा थी।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 02-16 January 2025 Issue No. 1-3

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, एम.ए. पृष्ठ 760 से 763)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की खबर और बैअत-ए-रिज़वान का वर्णन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी फ़रमाया है। आप अपनी एक तकरीर में बयान फरमाते हैं कि "इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबी को जमा किया" जब हज़रत उस्मान के वाक़िए की इत्तिला मिली "और फ़रमाया दूत की जान हर क़ौम में महफ़ूज़ होती है। तुमने सुना है कि उस्मान को मक्का वालों ने मार दिया है। अगर यह खबर सच्ची निकली तो हम ज़ोर से मक्का में दाखिल होंगे (यानी हमारा पहला इरादा था कि हम सुलह के साथ मक्का में दाखिल होंगे, जिन हालात के मातहत था वह चूंकि बदल जाएँगे इसलिए हम इस इरादे के पाबंद नहीं रहेंगे)। जो लोग यह अहद करने के लिए तैयार हों कि अगर हमें आगे बढ़ना पड़े तो या हम फ़तह करके लौटेंगे या एक-एक करके मैदान में मारे जाएंगे, वह इस अहद पर मेरी बैअत करें।" आपका यह एलान करना था कि पंद्रह सौ ज़ायर जो आपके साथ आए थे, एकदम पंद्रह सौ सिपाही की शक्ल में बदल गए और दीवाना वार एक-दूसरे पर कूदते हुए उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ पर दूसरों से पहले बैअत करने की कोशिश की। यह बैअत समस्त इस्लामी तारीख़ में बहुत बड़ी अहमियत रखती है और दरख़्त का अहदनामा कहलाती है, क्योंकि जिस वक्त बैअत ली गई उस वक्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक दरख़्त के नीचे बैठे थे।

(दीबाचा तफ़सीरुल् क़ुरआन, अनवारुल् उलूम भाग 20 पृष्ठ 308-307)

सुलह हुदैबिया के हवाले से और भी इन शा अल्लाह कुछ और तफ़सील है जो आगे बयान करूंगा।

ईस वक्त मैं यह भी कहना चाहता हूँ जैसा कि सब जानते हैं कि यूरोप में भी हालात बड़ी तीज़ी से जंग की तरफ जा रहे हैं।

यूक्रेन और रूस की जंग फैलने का ख़तरा बढ़ता जा रहा है।

धमकियाँ मिल रही हैं यूरोप के बाकी मुल्कों को भी। अधिकतर जो अक़्ल रखने वाले और अमन पसंद लोग, नेता हैं इस बारे में परेशान भी हैं। बहारहाल दुआ करें अल्लाह तआला अहमदियों और अमन पसंद लोगों को जंग के बुरे असरात से महफूज़ रखे और ये लोग जंग में ऐसे हथियार इस्तमाल न करें जिनके इस्तमाल से आने वाली नस्लें मुतासिर होती हों।

मुसलमान मुल्कों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें भी अक़्ल और समझ दे और वह लोग भी हक़ पहचानने वाले हों। अल्लाह उन्हें हक़ पहचानने की तौफ़ीक दे।

दूसरे इस बात की तरफ भी तवज्जो दिलाना चाहता हूँ कि ये हालात जिस तरह तेजी से बिगड़े हैं और बिगड़ रहे हैं। इन हालात की वजह से पहले ही लोगों में तवज्जो है लेकिन मजीद दोबारा याददहानी करा दूँ कि

घरों में दो, तीन महीने का राशन रखने की कोशिश करें लेकिन सबसे अहम नुक्ता यही है कि अल्लाह तआला का क़र्ब हासिल करने की कोशिश करें। उसकी रज़ा हासिल करने की कोशिश करें। उससे ताल्लुक़ पैदा करने की कोशिश करें। इसमें बढ़ने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक दे। ★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा)
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9 00 बजे से रात 11 00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित।
(30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकतुंद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार(10+2),(20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न)(20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) - (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफ़लता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) यात्रा का ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
नज़रात दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान, पिन कोड 143516
मोबाइल 09888232530, 09682627592
दफ़्तर 01872-501130
ई-मेल diwan@qadian.in

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad